लोकगीत
(LOK-GEET)

लोक का अर्थ है—संसार में नाम एवं सामान्य दिखने वाला। ऐसा कोई भी गीत जिसके रच... लोक में हो और परम्परागत रूप से बाद के लोगों को मिला हो, लोकगीत कहलाता है। प्रान्त व क्षे... भौगोलिक क्षेत्रों के निवासियों द्वारा अपनी सांस्कृतिक आवश्यकताओं के निमित्त भिन्न-भिन्न प्रकार... जो गीत गाए जाते हैं, उन्हें ही लोकगीत कहा जाता है। जनसाधारण का गीत ही लोकगीत होता है।

लोकगीत की विशेषताएँ

1. लोक-गीत लोक रंजन एवं जन साधारण की आन्तरिक भावनाओं का प्रतीक है।
2. लोक-गीत सहज ग्राह्य होते हैं।
3. सरल भाषा, सरल काव्य, सरल धुनों से संयुक्त इन गीतों में किसी व्याकरण अथवा शास्त्र... नियन्त्रण की आवश्यकता नहीं होती।
4. लोक-गीतों का प्रस्तुतन प्राकृतिक और स्वाभाविक ढंग से होता है।

Scanned with CamScanner

5. स्वर रचना में किसी राग विशेष, स्वर वैचित्र या गमक आदि का पूर्व निर्धारित बन्धन न होने पर भी लोकगीतों में सांगीतिक तत्व स्वाभाविक रूप से निहित होते हैं।
6. धुन के फैलाव की सीमा होने के कारण लोकगीत मनुष्य को अधिक आकर्षित करता है।
7. भाषा के माध्यम से जिन सूक्ष्म भावों को अभिव्यक्त करना कठिन होता है वे स्वर लहरियों के माध्यम से स्वतः प्रकट हो जाते हैं।
8. सशक्त भाव पक्ष के कारण यह अन्य सभी शैलियों में अग्रणी है।
9. लोकगीतों में कृत्रिमता नहीं होती।
10. लोकगीतों का सबसे बड़ा गुण है इनकी स्वाभाविकता, स्वच्छंदता और सरलता।
11. लोकगीतों में जीवन की वास्तविकता के दर्शन होते हैं, जन्म से लेकर मृत्यु तक के जीवन के सभी भाव लोकगीतों में मिलते हैं।
12. यद्यपि लोकगीत अपरिष्कृत, अविकसित सभ्यता की ओर संकेत करता है तथापि अपनी परिधि में लोकगीतों की भाषा के माध्यम से उलाहना देना, नैतिक मूल्यों की ओर संकेत करना, सामाजिक आदर्शों के सम्बन्ध में निर्देश देना, पारम्परिक, सामाजिक आदर्शों के सम्बन्ध में निर्देश देना, सामाजिक मूल्यों, रीति-रिवाज एवं सांस्कृतिक रूपरेखा की ओर संकेत करने में लोकगीतों की भाषा समर्थ है।

लोकगीतों का सामान्य वर्गीकरण

संस्कार गीत
—बच्चे का जन्म
—मुंडन
—यज्ञोपवीत
—विवाह
—गौना आदि।

जाति गीत
—अहीर के
—चमार के
—गोंड के
—कहार के
—धोबियों के

क्रिया गीत
—रोपनी
—सोहनी
—जंतसार

अन्य गीत
—खेल सम्बन्धित आदि।

ऋतु या माहगीत
—चैती
—कजली
—बारह मासा
—होली आदि

धार्मिक गीत
—तीज
—वृत के गीत
—गोधन
—भक्ति परक आदि।

सामयिक गीत
—युग की घटनाओं से प्रभावित
—मुगलों के अत्याचार
—स्वतंत्रता आन्दोलन के गीत
—देश-प्रेम आदि।

हिन्दी साहित्यकोश में लोकगीत शब्द के तीन अर्थों का उल्लेख है—
1. लोक में प्रचलित
2. लोकनिर्मित गीत
3. लोक-विषयक गीत

Scanned with CamScanner

लोकगीत के अर्थ, विशेषताओं और प्रकारों को स्पष्ट करने में लोकगीत की महत्वपूर्ण परि
को प्रस्तुत किया जा रहा है—

चैम्बर्स डिक्शनरी के अनुसार—"ऐसा कोई भी गीत जिसका उद्गम लोक में और जो पर
रूप में पाश्चाद्वर्तियों को मिला ही है।"

कुंजबिहारी दास के अनुसार—"लोकसंगीत उन लोगों के जीवन की अनायास प्रका
अभिव्यक्ति है जो सुसंस्कृत तथा सुसभ्य प्रभावों से बाहर कम या अधिक रूप में आदिम अवस्
निवास करते हैं। यह साहित्य प्रायः मौखिक होता है और परम्परागत रूप से चला आ रहा है।

डॉ. सत्येन्द्र के अनुसार—''वे गीत जो लोकमानस की अभिव्यक्ति हों अथवा जिसमें लोक
मास हो, लोकगीत कहलाता है।''

डॉ. विश्वनाथ के अनुसार—"लोकगीतों का विषय पर्व, उत्सव, त्यौहार इत्यादि सब कु
उनमें लोक के जीवन का चित्रण हैं। लोकगीतों की स्वरावलि में जटिलता नहीं।"

डॉ. नीलमणि उपाध्याय के अनुसार—"लोकगीतों में हमारा जीवन, हमारी संस्कृति और स
भावनाएँ बोलती हैं। इन गीतों से हमें तत्कालीन समाज का अच्छा ज्ञान हो जाता है। लोगों के सुख-दु
उनकी आशाएँ, आकांक्षाएँ इन लोकगीतों में मुखरित होती हैं। अपनी उमंग में जब लोकगायक कि
गीत की रचना करता है तो शेष समाज इसे सहज रूप में अपना लेता है। फिर यह लोकगीत लोकगा
का न रहकर सम्पूर्ण समाज का बन जाता है। छन्द और संगीत का शास्त्रीय ज्ञान न होने पर भी
गीतों में जीवन का संगीत होता है। अतः यह कृत्रिम न होकर जीवन की तरह ही स्वाभाविक होता है

श्री देवेन्द्र सत्यार्थी के अनुसार—"लोकगीत का मूल जातीय संगीत में है।"

Scanned with CamScanner